M.A-II Hons Paper - IV

M.A-I SEMESTER CC-IV

01

41

शौरसेनी आगम साहित्य का इतिहास

इकाई -3. शौरसेनी प्राकृत साहित्य के ग्रन्थकार का सामान्य परिचय

Q1. आचार्य नेमिचन्द्र और उनका साहित्य का जीवन काल का संक्षेप विवेचन करें?

Ans— आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती नन्दी संघ की सारव के प्रमुख आचार्य एवं देशीयगण थे। वे गंगवंशीय नरेश, राजा रामचमल्ल के प्रधान मंत्री और द्रविड़ देश के सेनापति चामुण्डराय के समकालीन थे। अतः इस आचार्य का सम्बंध अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों से था। चामुण्डराय ने अपने जीवन काल में श्रवणबेलगोला अथवा गोम्मट स्वामी बाहुबलि की मूर्ति का एक विशाल प्रतिस्थापित की थी। इसी कारण वे गोम्मट के नाम से प्रसिद्ध थे। उन्होंने आचार्य नेमिचंद्र की चरणों की साक्षी 96 हजार दिनार के गाँव गोम्मटेश्वर की उत्सव आदि हेतु समर्पित किये थे। प्रमाण से सिद्ध होता है कि दक्षिण भारत में आचार्य नेमिचंद्र एवं चामुण्डराय का विशेष स्थान था।

आचार्य नेमिचंद्र विक्रम की दसवी सदी के विद्वान थे और वे अत्यंत प्रतिभाशाली एवं सिद्धांत शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान थे। सिद्धांत सार के विशिष्ट विद्वान होने के कारण चक्रवर्ती कहे जाते हैं।

इन्होंने आचार्य अभयनन्दि वीरनन्दि और कनकनन्दि को अपना गुरु माना है। इन्होंने स्वयं गोम्मटसार के अंत

मे कहा है - जिस प्रकार चक्रवर्ती षटखण्ड पृथ्वी को अपने चक्र द्वारा आधीन करता है इसी प्रकार मैंने अपने बुद्धिरूपी चक्र से षटखण्डागम को सिद्ध कर अपनी इस कृति मे भर दिया है। इन्ही सफलता के कारण उन्हे सिद्धांत चक्रवर्ती की उपाधि प्राप्त हुई।

आचार्य नेमिचन्द्र का शिष्यत्व चामुण्डराय ने ग्रहण किया था। इसने श्रवणबेलगोल में चैत्रशुक्ल पञ्चमी रविवार 22 मार्च सन 1028 मे विश्व प्रसिद्ध गोम्मट स्वामी बाहुबलि की मूर्ति प्रतिष्ठित की थी यह मूर्ति अपनी विशालता और कलात्मकता के लिए विश्व मे अतुलनीय है

आचार्य नेमिचंद संस्कृत प्राकृत एवं कन्नाडा भाषा के विद्वान थे। उनके प्रधान शिष्य माधव चंद्रत्रैविद थे। उन्होने आचार्य नेमिचंद द्वारा रचित त्रिलोकसार आदि ग्रंथो की टीकाए की है। तथा उपयुक्त तीनो त्रैविद पद प्राप्त किया था। धवल आदि महान सिद्धांत ग्रंथो के आधार पर उन्होने गोम्मटसार नामक ग्रंथ की रचना की है गोम्मटसार को दूसरा नाम पंचसंग्रह भी दिया गया है।

जैन परम्परा मे आचार्य नेमिचंद्र का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। उनके द्वारा लिखी हुई ग्रंथ जैन परम्परा के लिए काफी आवश्यक है। उन्होंने प्रमुख ग्रन्थ लिखे है। जो इस प्रकार के है।

(1) गोम्मटसार - इसके दो भाग है - षटखण्ड के अनुसार (1) जीवकाण्ड • (2) कर्मकाण्ड

43

(1) जीवकाण्ड – जीवकाण्ड मे 733 गाथाएँ है।
(11) कर्मकाण्ड – कर्मकाण्ड मे 962 गाथाएँ है।
इस ग्रन्थ पर संस्कृत मे दो टीकाएँ लिखी गयी है (1) नेमिचन्द्र द्वारा जीव प्रदीपिका और (2)

अयचन्द सिद्धान्त चक्रवर्ती द्वारा मन्द प्रबोधिनी. गोम्मटसार पर केशववर्णी द्वारा रचित कन्नड़ वृत्ति भी लिखी मिलती है। टोडरमलजी ने सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नाम की वचनिका लिखी है।
(1) जीवकाण्ड – जीवकाण्ड मे महाकर्म प्राभृत के सिद्धांत सम्बंधी जीवस्थान, क्षुद्रबंध, बन्धस्वामी, वेदनाखण्ड, और वर्गणाखण्ड इन पाँच विषयो का वर्णन है। चौदह मार्गणा और उपयोग इन बीस अधिकारो मे जीव की अनेक अवस्थाओ का प्रतिपादन किया गया है।
(11) कर्मकाण्ड – कर्मकाण्ड मे प्रकृतिसमुत्कीर्तन, बन्धोदय, सत्व, सत्वस्थान, भंग त्रिचूलिका स्थान समुत्कीर्तन, प्रत्यय भावचूलिका और कर्मस्थिति की रचना नामक नौ अधिकार कर्म के विभिन्न निरूपण किया गया है।
(2) त्रिलोकसार → इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ मे 1018 गाथाएँ है। यह करणानुयोग का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसका आधार पर त्रिलोकसार ग्रन्थ है।

(3) लब्धिसार → आत्मशुद्धि के लिए पाँच प्रकार की लब्धिया शुद्धियाँ आवश्यक है इन पाँच लब्धियों के कारण लब्धि प्रधान है। इस लब्धि के प्राप्त होने पर मिथ्यात्व से छूटकर सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाती है। इस ग्रन्थ मे तीन अधिकार है – (1) दर्शन लब्धि (2) चरित्र लब्धि एवं (11) क्षायिक चारित्र इन तीनो अधिकारो मे आत्मा की शुद्धि रूप लब्धियो की प्राप्ति करने की विधि पर प्रकाश डाला है।

(4) क्षपणसार — कर्मों के क्षय करने की विधि का निरूपण इस ग्रन्थ में किया गया है। इसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि माधवचन्द्र त्रैविद्य ने बाहुबलिमन्त्री की प्रार्थना से संस्कृत टीका लिखकर सन् 1203 में पूर्ण किया है।

(5) द्रव्य संग्रह → यह छोटा सा ग्रंथ बहुत ही उपयोगी है, इसमें कुल 58 गाथाएँ हैं। जीव, अजीव, धर्म, अधर्म, आकाश, काल, कर्म तत्व ध्यान आदि की चर्चा संक्षेप में व्यवस्थित ढंग से की गयी है।

Scanned with CamScanner